



इच्छाधारी

साँप



www.rajcomics.com

Vijay Pradham
83

इन्धुधारा आप

कथालेखक: शिवराज चित्रांकन: त्रिशूल कॉमिको आर्ट, सम्पादन: प्रमिला जैन









ठीक है।
कल लौली
दहेगा या जखर
दहेगा।



अगले दिन - राजमहल हाकर की मूर्ति के सामने लौली ने अपने
मुँह के रोंट खुरा।

मुझे आधीरुदि
दीजिए बाबा - सर्प देश
के आंखाज और बहादुर
नाग का खिलाड़ मैं
ही अर्जित करूँ।

जखर
मेरा कुछ नहीं
बिगाड़ सकता
बाबा।

मेरा आधीरुदि
लेते बाबा है, जखर
मुझे जखर की
मक्काहियों से डर
नहीं रहता है।



दुश्मन की
शक्ति को कम
जायना अक्लमंदी
नहीं है - जखर के
हाथ में सौ नागों
जितना कम है।



लौली हंस पड़ा।

केवल कम
से कम होता है -
फुली ने वह मुझे दू
भी नहीं सकता।

सावधान
रहना बेटा।

राजमहल के एक बहुत बड़े मैदान में - राजा दीखनाम के बराबर में छोड़े सेनापति ने बुमछ
आवाज में कहा -



सर्प देश के
नागाहिकों। बीच मैदान में जो
अलाव जल रहा है - वह सौ भीट
सम्बा है - जो नाग एक ही धुलाम
में उछे पाए कर लेगा उछे सोने का
ऐसा चमत्कारिक दंडा दिया
जायेगा - जिसका दृष्टकभी
चकल नहीं होती।

एक नाम है जोरिल की। मगर वह वह
मीटिंग इलाक के बाद ही अलाव में गिर
पड़ा और ...



... भस्म हो गया।

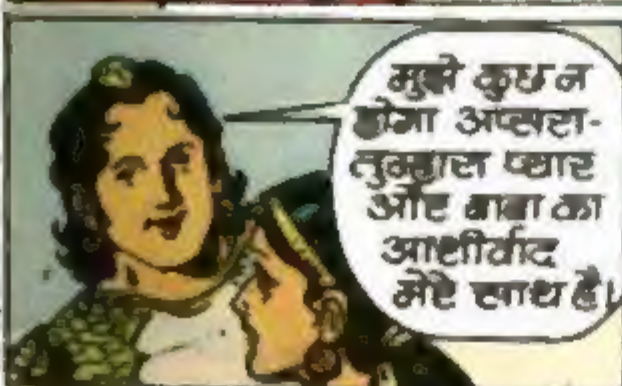
साँपों के रोहते फटक पड़ गये और दर्दक
दीर्घ में सल्लाटा छ गया।



मैं अलाव को पार कर दूंगा



नहीं लौसी!
जान जोरिल में
मत डालो।



मुझे कुछ न
होगा अप्सरा-
तुम्हारा प्यार
और बाबा का
आशीर्वाद
मेरे साथ है।

लैचाटियां शुरू हो गई और लौसी साँप में परिवर्तित
हो गया और अलाव के चारों ओर घूमने लगा।



धप

तुलसी कौमिक्स

किर अचानक पूंछ
टिकाकर सीधा छड़ा
हो गया।



अचानक उसने अलाव के ऊपर
छलांग लगा दी।



पलक झपकते ही तौली
अलाव की पादकट मल



तौली जिन्दाबाद

दर्शक खुशी से चिल्लाये।



हुर्र... हुर्र...

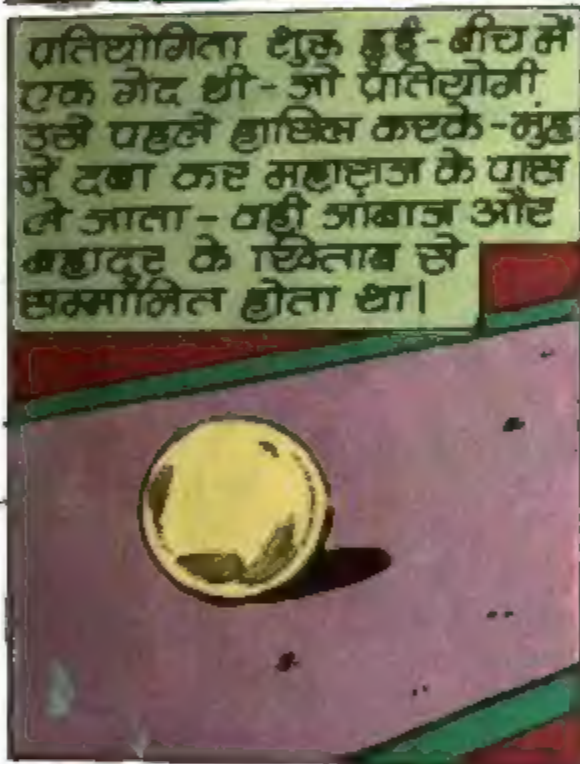
अपसरा खड़ी होकर चिल्लायी।

जबकि से यह सहन नहीं हुआ - वह राजा के मंच पर खड़ा होकर
जोश से चिल्लाने लगा -



तौली- हिम्मत
हो तो मुझसे मुकाबला
करो!

मे तैयार हूँ!





लौही बहुत बड़े हुए फुटी से बचा।

तभी पीछे से आकर शांतिशाली जखर लौही को अपनी कुंठली में कसने लगा



लौही की आँखों के समक्ष मौत का अंधेरा छा जाता है।



राजा दीखलाम वृह से चिन्मग्न थे-



दो सैनिकों ने महाराज को घेर लिया।



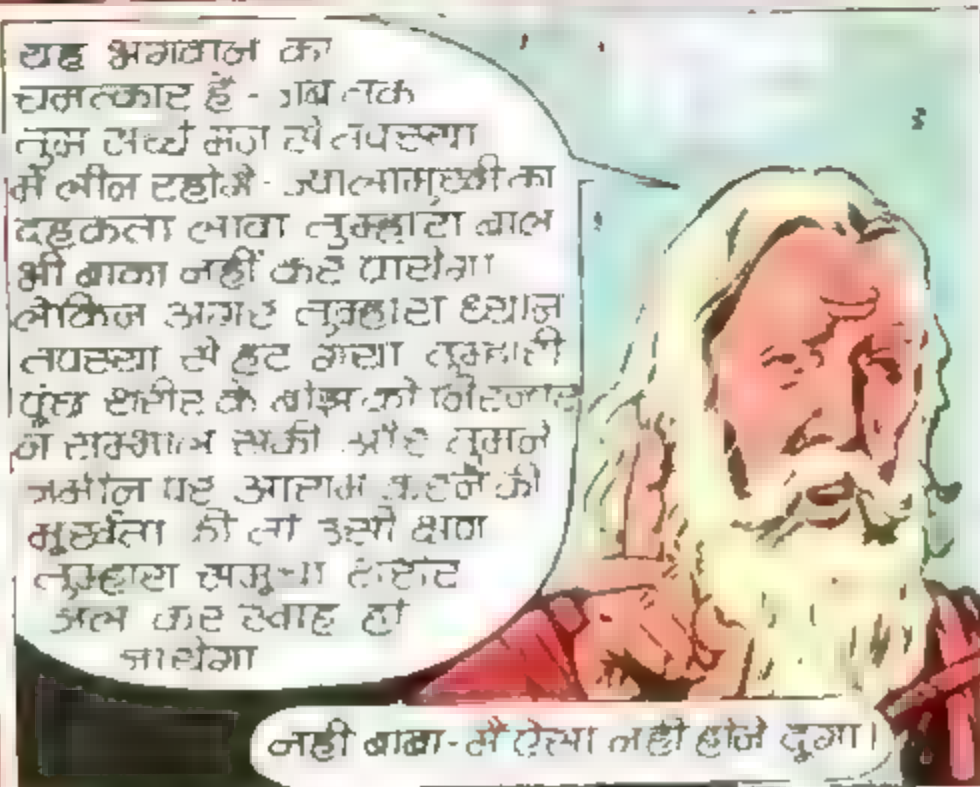
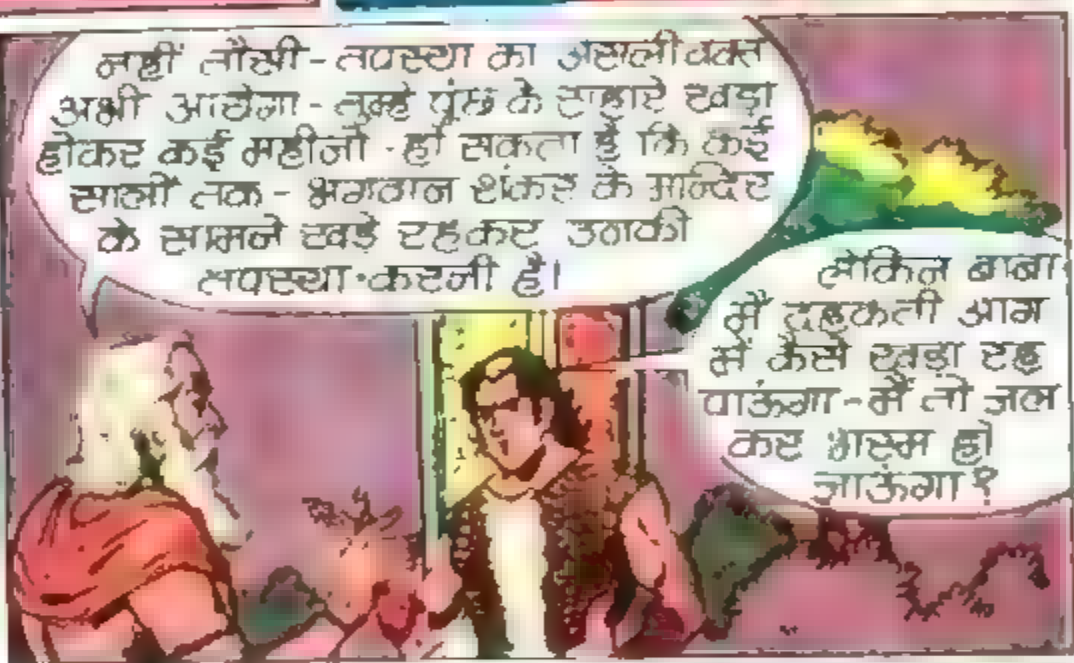
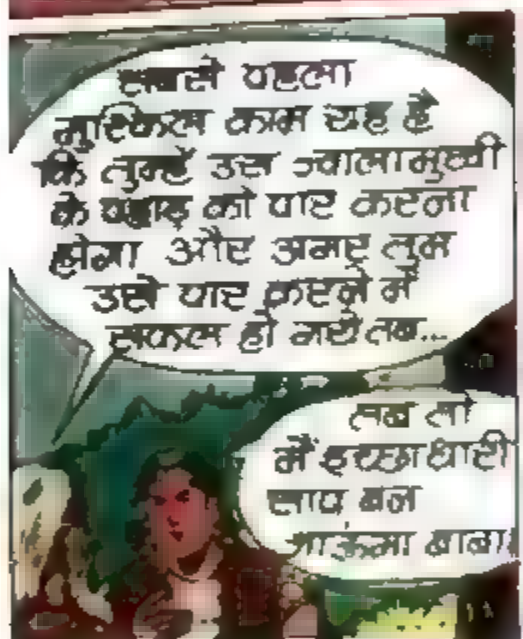
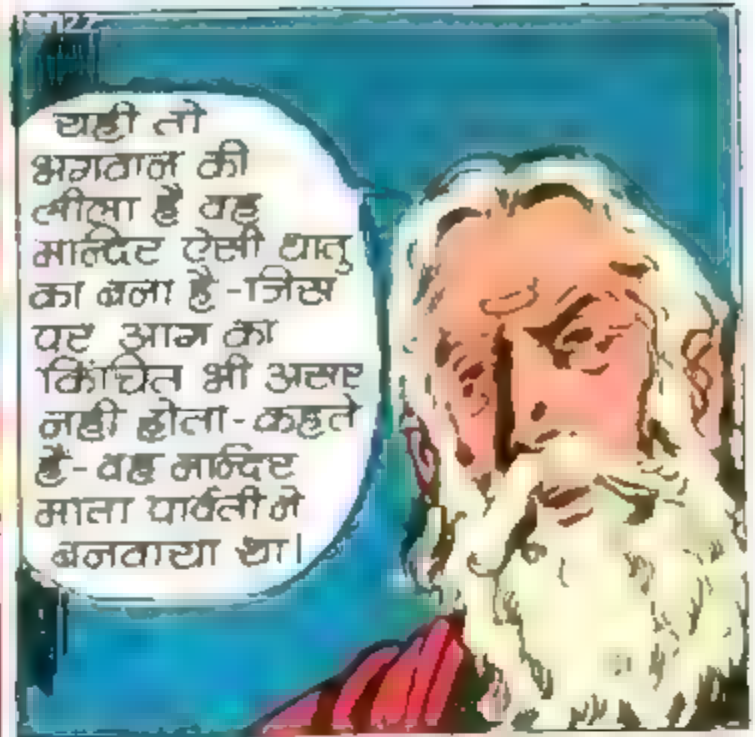
दर्क दीर्घा में शोर मच गया। अक्सर भी चिन्मग्न थे-

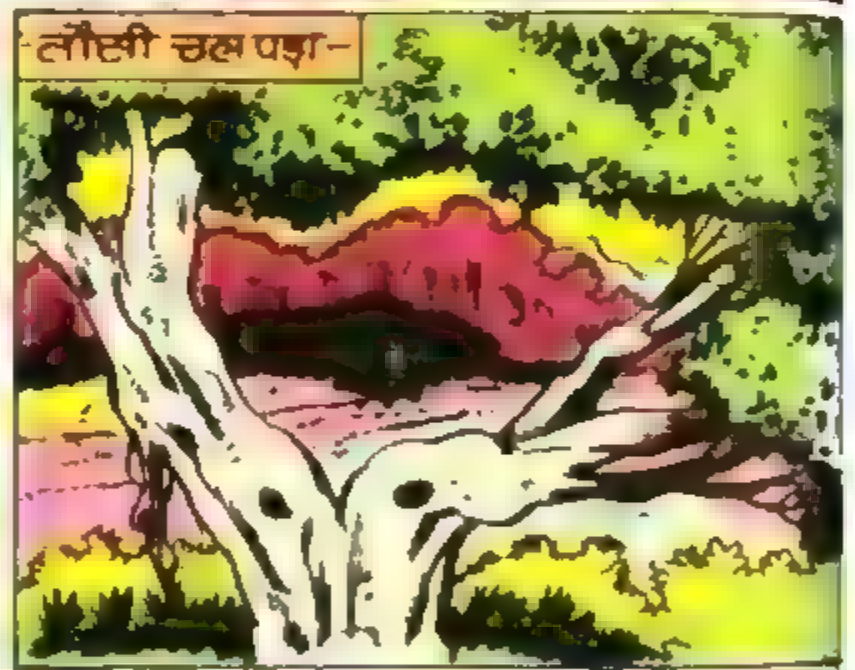
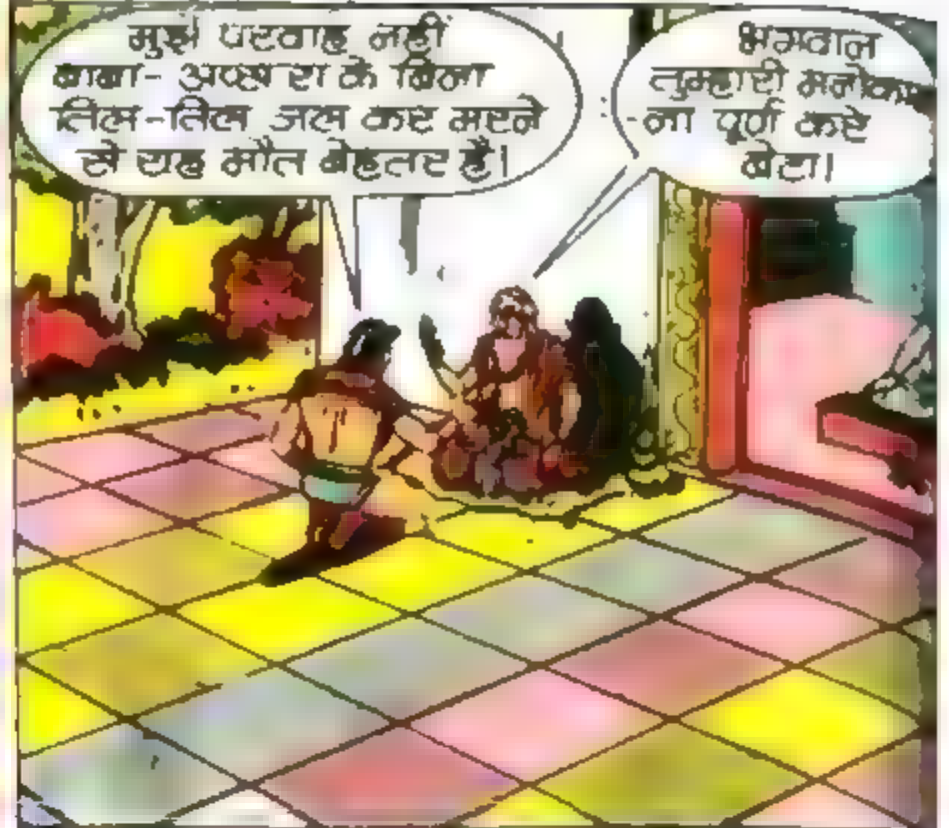
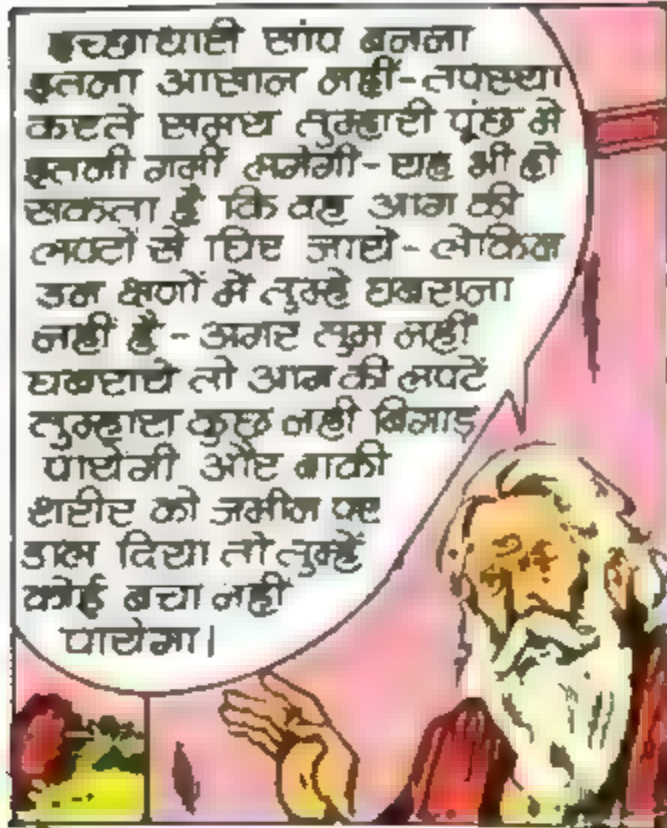




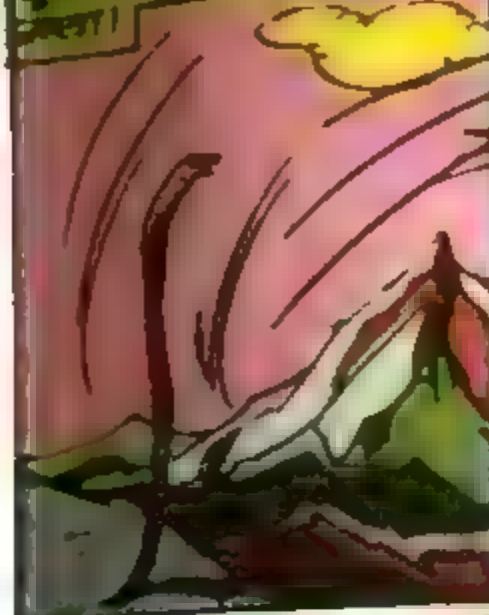
तुलसी कॉमिक्स







तोही लप में लपटील ओह
पुंछ पर सीधा छक्का हो
गया।



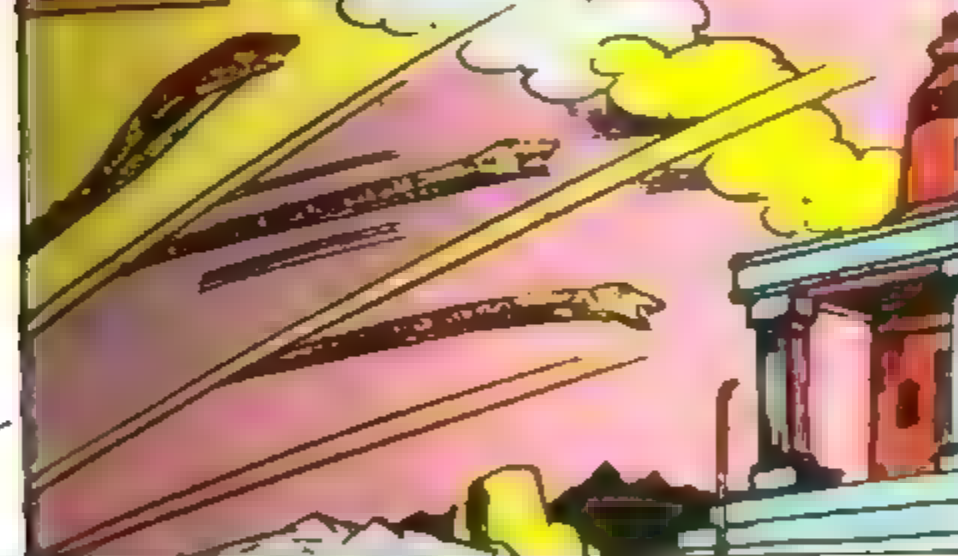
उछले छलांग लगाई।



बीच दाहले में उलका टापीट
लड़खड़ाया वह पूछ के बल
गिरा - पूछ दहकते लप में
पड़ते ही वह चिल्लाया -



वह फिर छलांग लगाते लगा - और फिर धुंही तील
दरबार के बाव मन्दिर के बाहर पूछ के बल छक्का
हो गया।



... और फिर वह तपस्या में लीन
हो गया।



अचानक बहुत तेज ओधी
शुरू हो गई।



ओधी तपस्या भंग न
कर सकी। तब छलांग
बाटिश शुरू हो गयी।



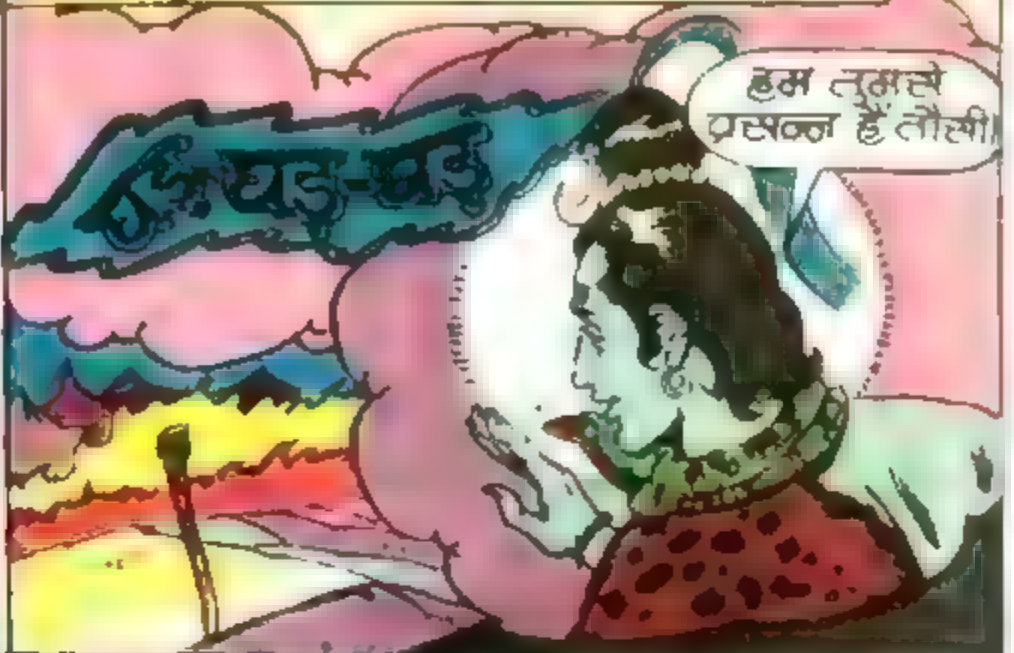
तोही के टापीट से अलंछनों
बाट के चुलिया उतरने लगीं।



पूछ और उसका शरीर आम की लपटों से जलने लगा।



किन्तु कहीं महीनों के बाद एक दिन छड़-छड़ की आवाज हुई और भगवान की आवाज गूजी-

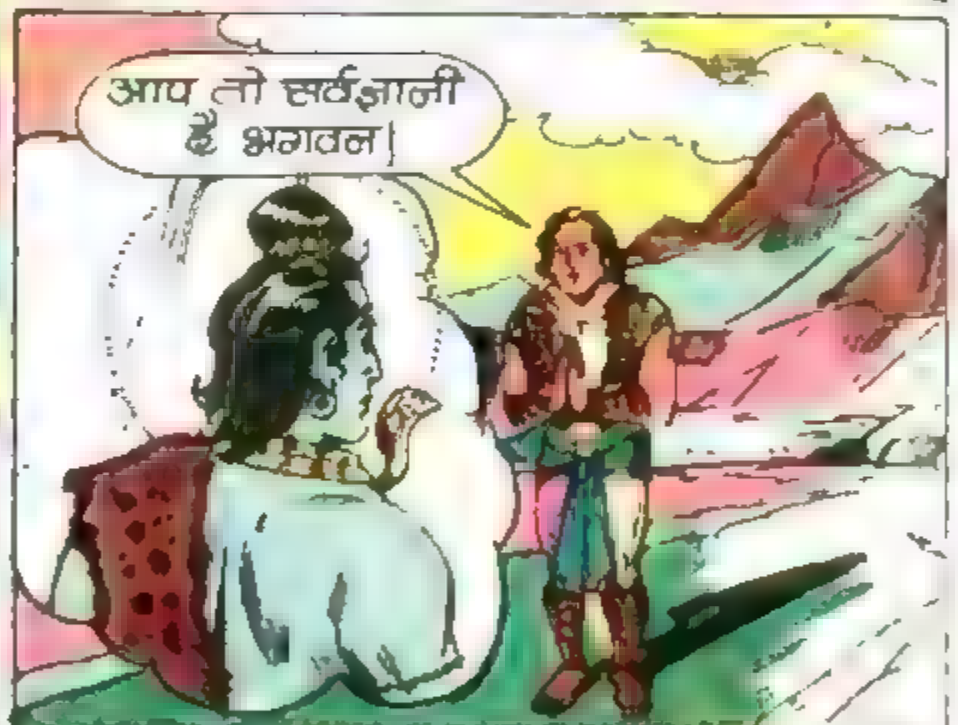


भ-भगवान
आप ?



तुम्हारी
पूछ जल्द चुकी है
उसे नये शरीर की
आवश्यकता है-
क्यों तौली- यह
चाहते हो न ?

आप तो सर्वज्ञानी
हैं भगवान।



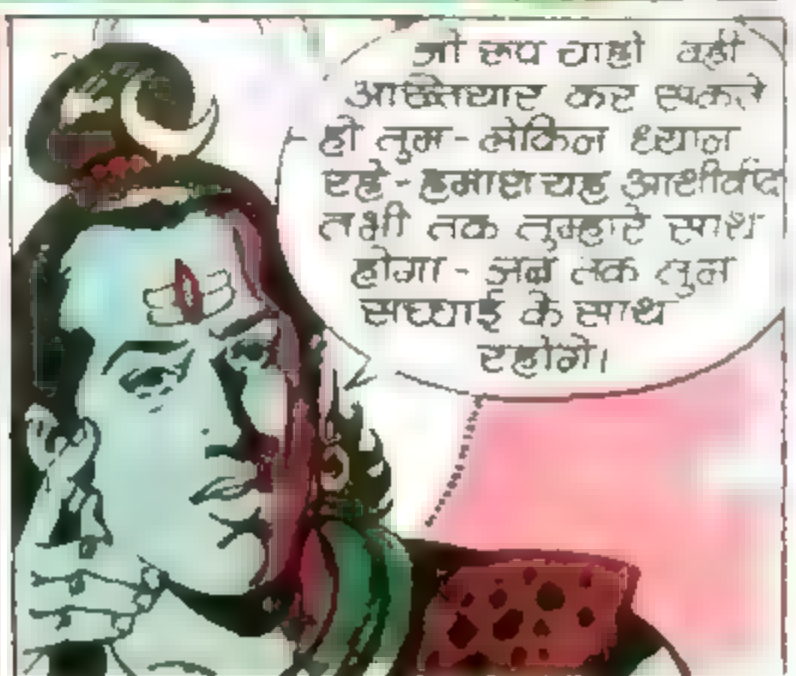
भगवान संकट की हुंसी में एक टूटन चमक उठा- जिसकी किन्तु धारों ओर फैल रही थीं।

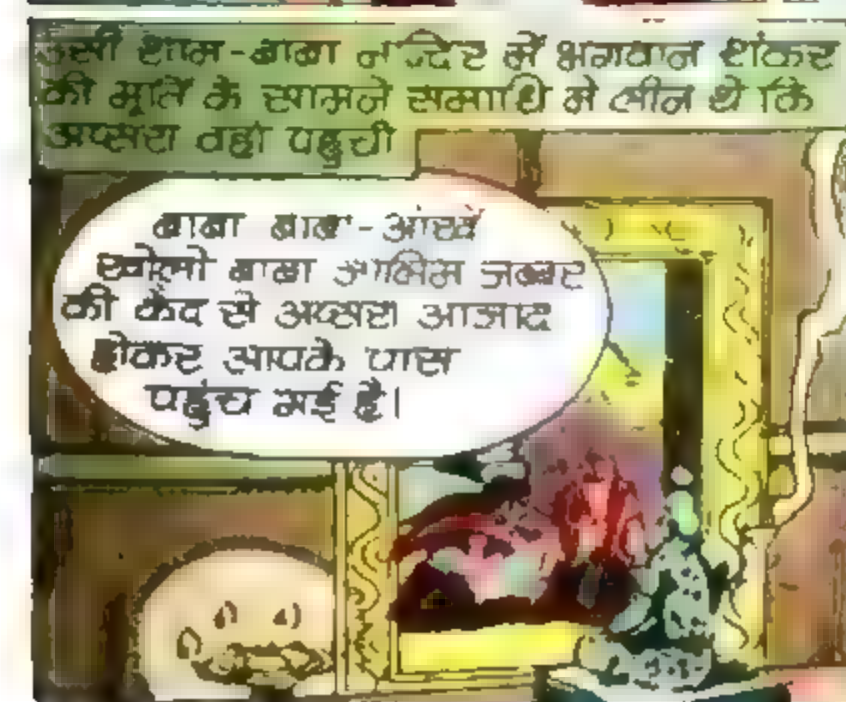
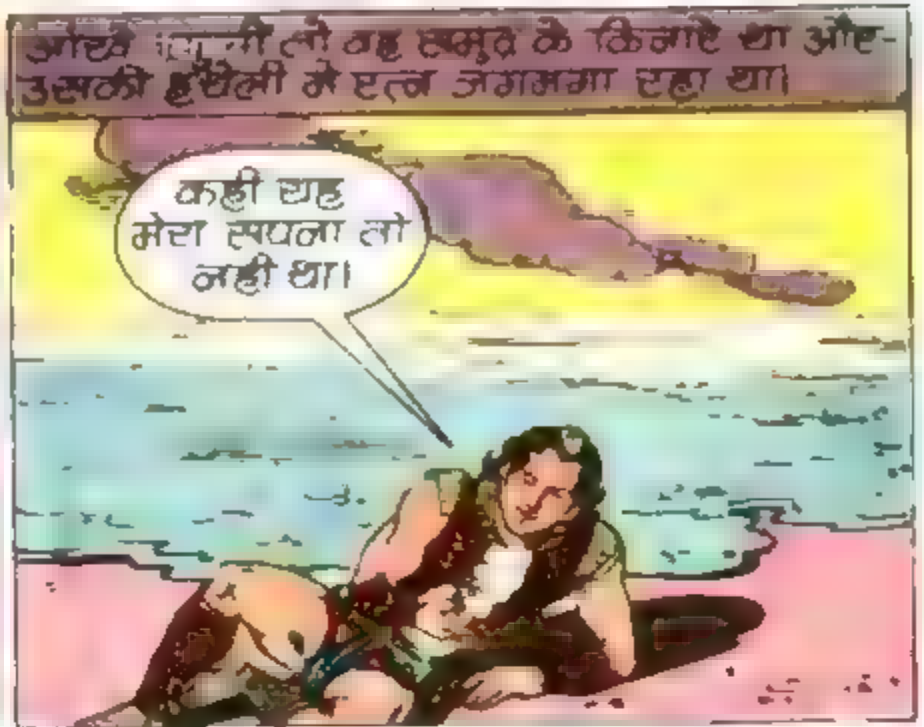
तुम्हारी
तपस्या पूर्ण हुई-
हमारे नजदीक आकर
यह टूटन प्राप्त करो...१

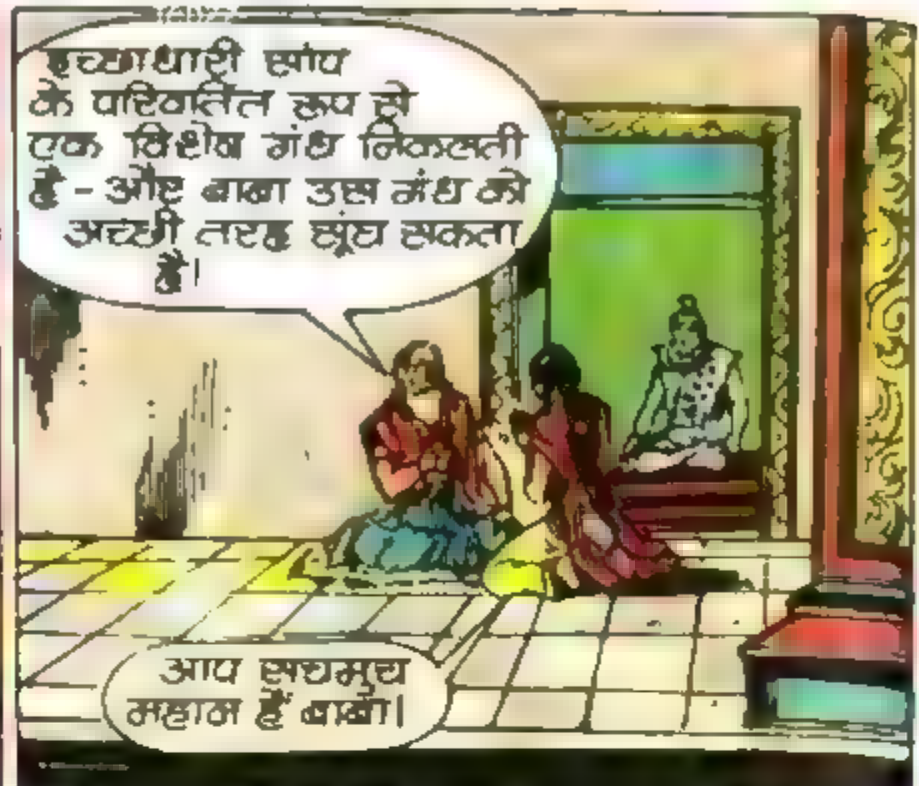


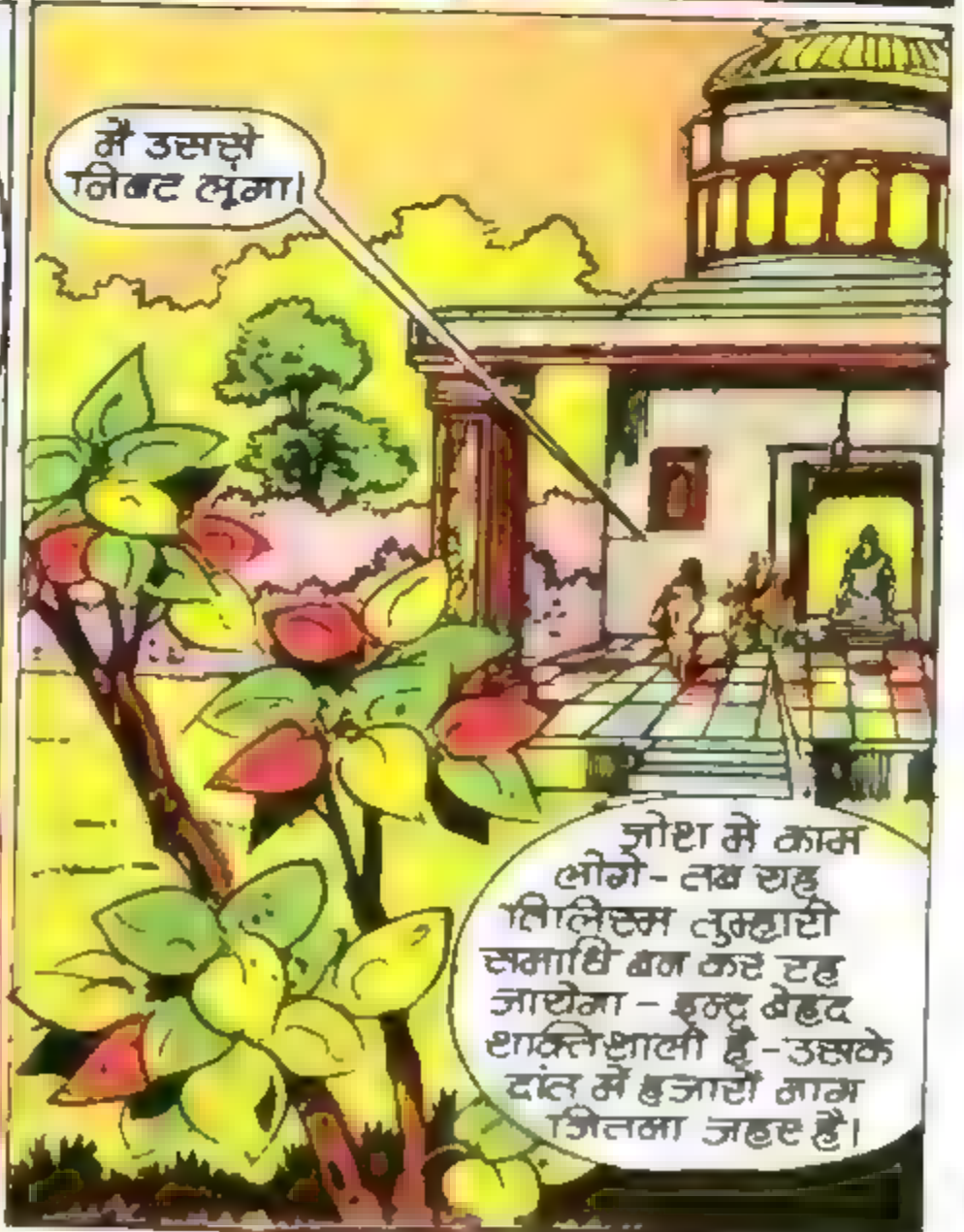
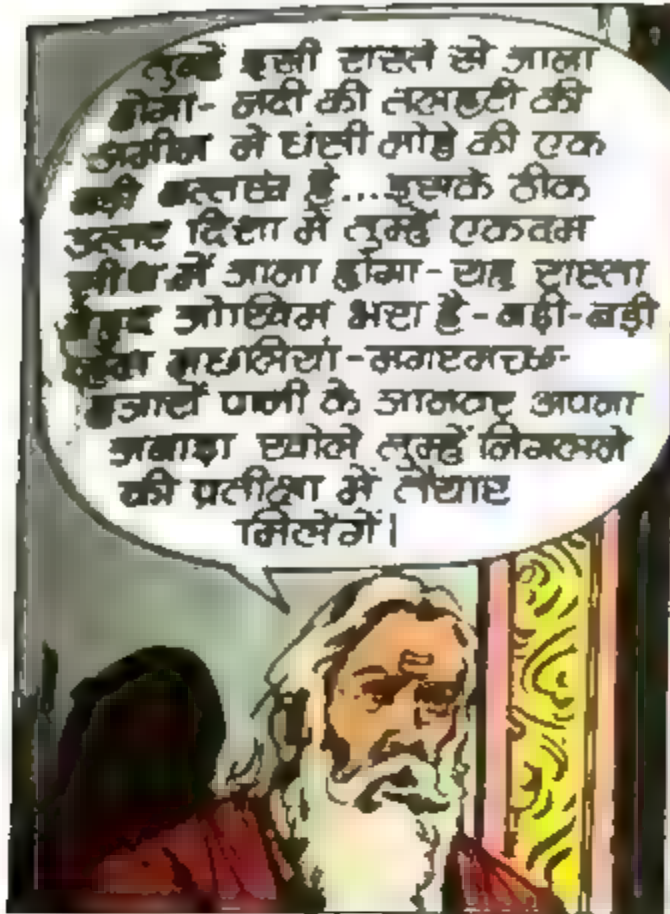
मैं
इच्छाशाली
सांप बन
गया
भगवान।

जो रूप चाहो वही
आखिरकार कट सकते
हो तुम- लेकिन ध्यान
रहें- हमारा यह आशीर्वाद
तभी तक तुम्हारे साथ
होगा- जब तक तुम
सच्चाई के साथ
रहोगे।









लोहा जोड़ा में आ गया।

मुझे किसी की परवाह नहीं- आप मुझे त्रिभिस्म के बाड़े में बताइये।

fenzz

उस बहजद की जड़ में ही वह रास्ता है- जो त्रिभिस्म के उस बाग तक पहुँचता है - जहाँ चारों ओर सौ से ऊपर कमरे बने हुए हैं।

मेरी जख्मों कोल से कमरे में कैद हैं ?

राह तो मैं तभी जालता-बोकेल मेरा दिव्य झाल मझे सफल कर रहा है कि वह वहाँ किसी एक कमरे में कैद है।

मुझे आशीर्वाद दो बाबा...!

भगवान तेरे पवित्र प्रेम को सफल बनाये।

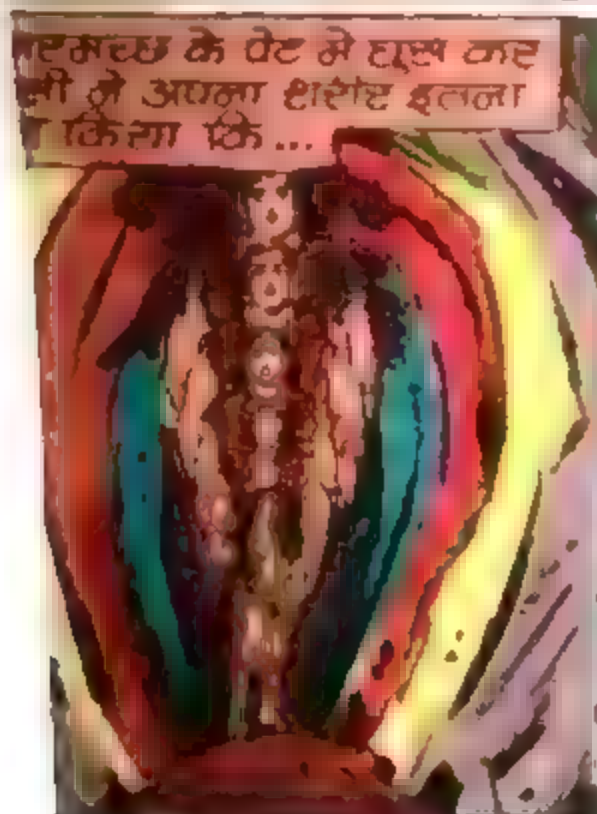
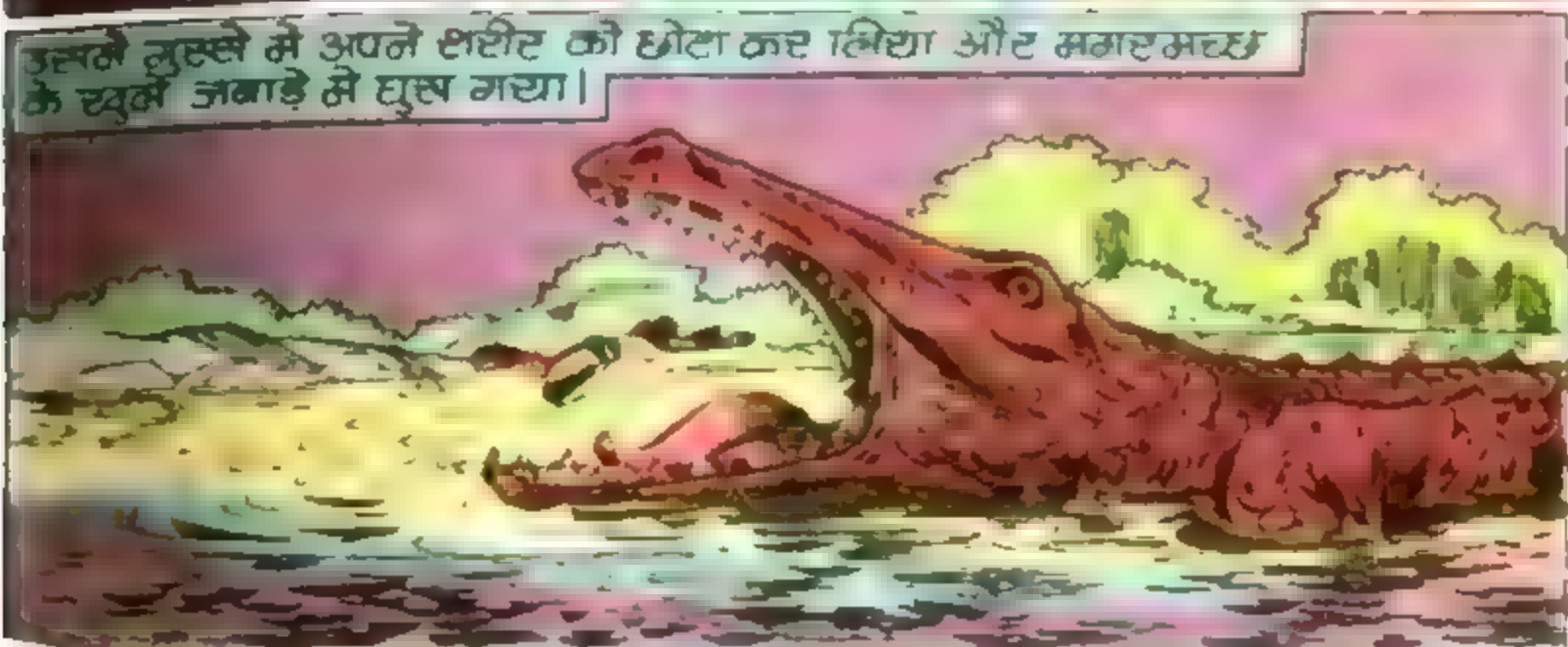
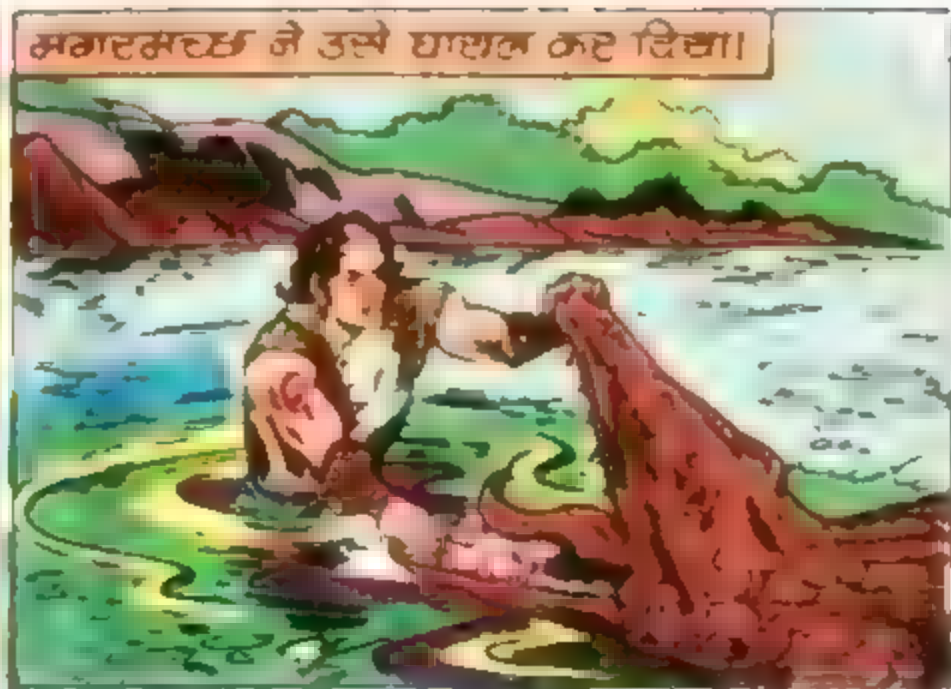
उन क्षणों में मन्दिर के दरवाजे पर जख्मों का एक जासूस खड़ा था - उसने छिप कर दोनों की बातें सुन ली थी।

राह खबर महाराज जख्मों को सुनाऊंगा तो मुझे आशीर्वाद देना होगा।

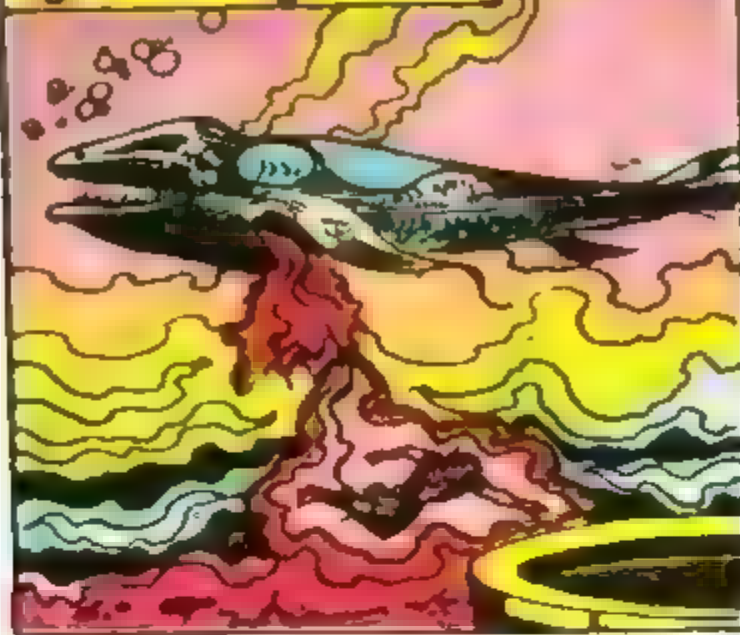
उधर लौसीले राजमहल के पीछे बहती नदी में छुआता लगाई।

छुआता

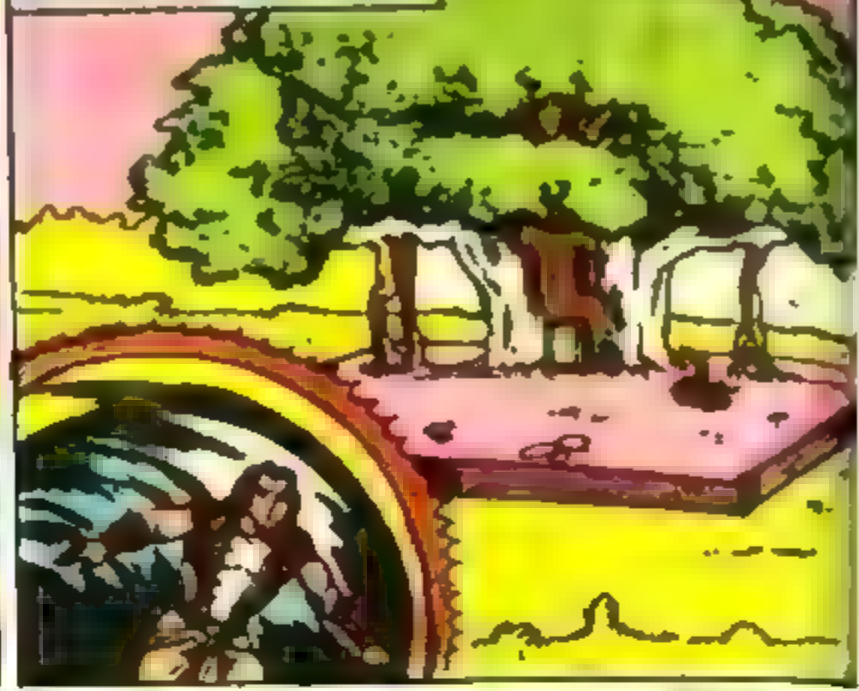
मिथुन की राशि में जन्म हुआ है १२ जे २४ ३३



हास्ते ने उसका मुकाबला करके मरुली से भी हुआ- लेकिन उसे भी पुरानी लहकीब से घायल करके लौसी सुएं तक पहुंच गया।



सुएं ने निकलते ही उसे बदन का दर्द दिखाई दिया- जहां इन्फ नामक नाम आसम से बैठा था।



लौसी ने कुछ सोच कर जख्म का रूप धारण कर लिया।

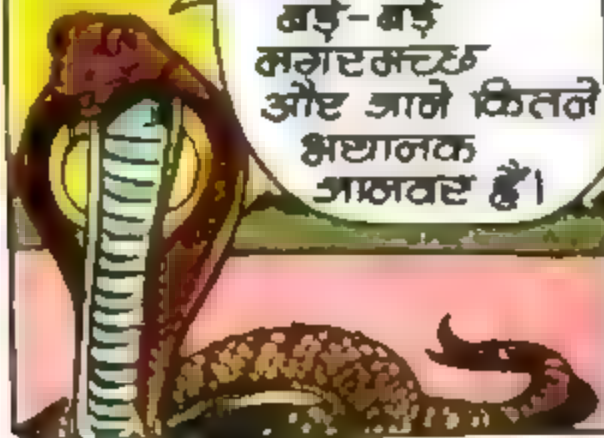


महाराज आप...?

हां- हमने सोचा कि आज दूसरे हास्ते से तिलिस्म में दाखिल होकर देखेंगे!



यह आपने अच्छा नहीं किया महाराज - इस हास्ते से बड़े-बड़े मगरमच्छ और जाने कितने भयानक जानवर हैं।



जख्म को किसी का भय नहीं - अच्छा देह मत करो हास्ते से हटो और हमें तिलिस्म में दाखिल होने दो।

जैसी आज्ञा महाराज!



लौह की आँखें चमक उठीं- मगर अचानक इन्द्र की ठिठकते देख कर वह चौंक पड़ा।

तुम देख करके राजघराने का अपमान कर रहे हो ?

जी नहीं- मैंने राजघराने का कुछ पिछा है- मैं उसी की दृष्टि कर रहा हूँ।

तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है इन्द्र... ?

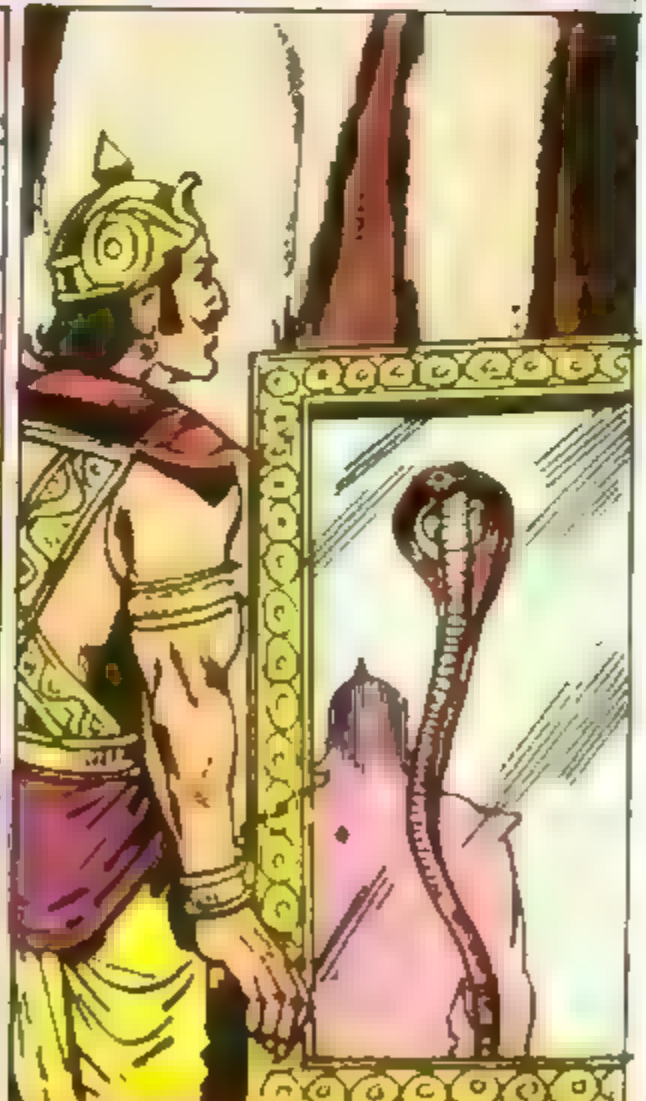
इन्द्र के शरीर की केंचुली हजारों बार बदली हैं और ये केंचुली इसलिए नहीं बदली कि मुझे कोई बीमारी है... बल्कि इन बदलती केंचुलियों ने जमाने के बदलते हजारों रंगों को अपनी आँखों से देखा है और ये आँखें साफ देख रही हैं....

क्या बकवास कर रहे हो तुम ?

तुम्हें थोछा ही रहा है इन्द्र - हम इच्छाधारी सांप नहीं- बल्कि वास्तव में तुम्हारे महाराज जन्म रहे हैं।

ये आँखें साफ देख रही हैं उस इच्छाधारी सांप को- जो मेरे महाराज का रूप धारण करके मुझे थोछा देने के लिए आया है।

अच्छा- तो इस आईने में अपनी छुरत देखिए।



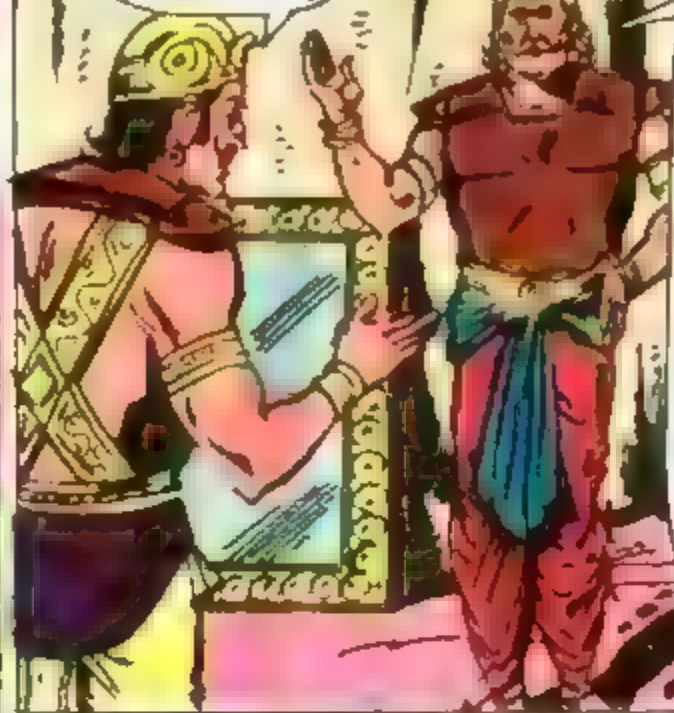
बदमाश के चेहरे के चमकते पर धाँवे आईने को देख लौह की अवाक रह गया- उस आईने में एक साँप का अकल उभर रहा था।

इन्द्र ने ठहाका लगाया—

हा-हा-हा...
यह आईसा मैंने
दूर दूरि के हिसाब से
तुम जैसे इच्छाधारी सांप
के लिए ही रत्न छोड़ा था-
जिससे मैं पहचान कर
सकू कि आने वाला
कोई छद्मधारी तो
नहीं है।

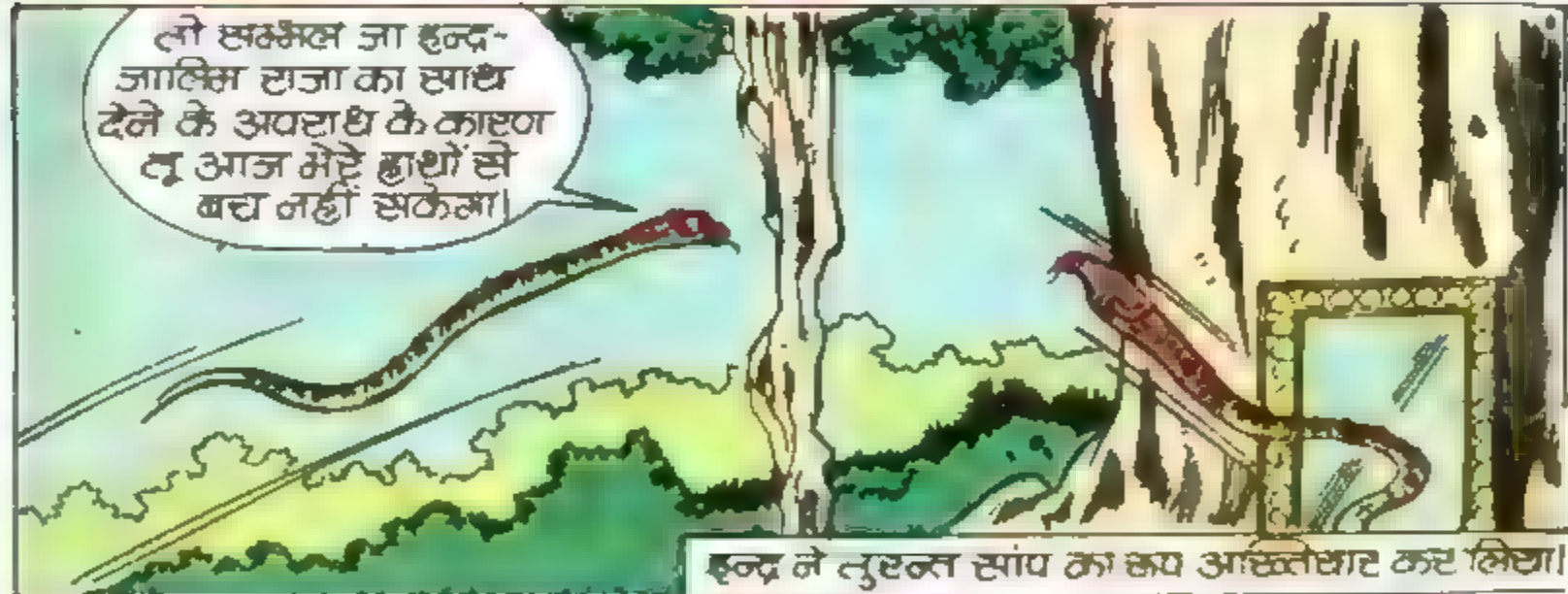


न-लेकिन
इसमें मेरी
शकल...?



हा-हा-हा तुम
तपस्या से
इच्छाधारी सांप
अवस्था बन गये-
लेकिन तजुबे से
पकी आँखें तुम्हारे
पल नही हैं- वरना
तुम यह रहस्य
अवस्था जानते होते
कि जब कभी कोई
इच्छाधारी सांप-
किसी आईने के
सामने आता है-
तब उसकी छद्म
शेव वाली छुल
नही- बल्कि
असली छुल
आईने में दिखाई
पड़ती है।

तो सम्भव जा इन्द्र-
जासिम राजा का साथ
देने के अवसर के कारण
तू आज मेरे हाथों से
बच नहीं सकेगा।

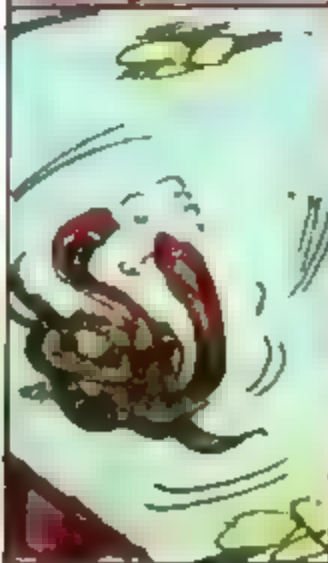


इन्द्र ने तुरन्त साँप का रूप अस्तिवाद कर लिया।

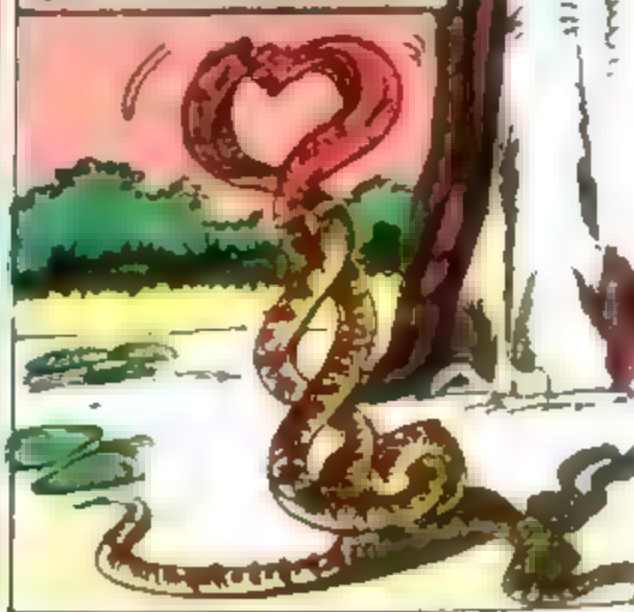
तौली साँप बन कर इन्द्र पर
दृष्ट पड़ा।



दीनों में भयानक
जंग शुरू हो गई।



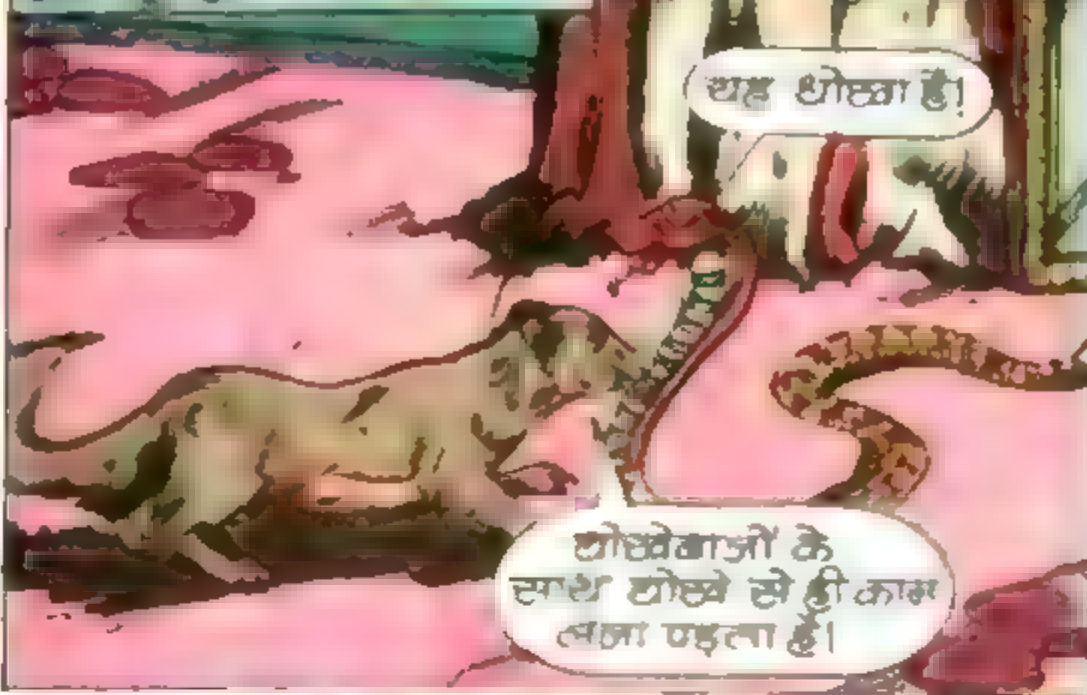
इन्द्र भापी पड़ने लगा।



अच्छेबाजी ने लेकले का
कप धोकर कट लिया।



इन्द्र दूर हट कर चिन्माणा-



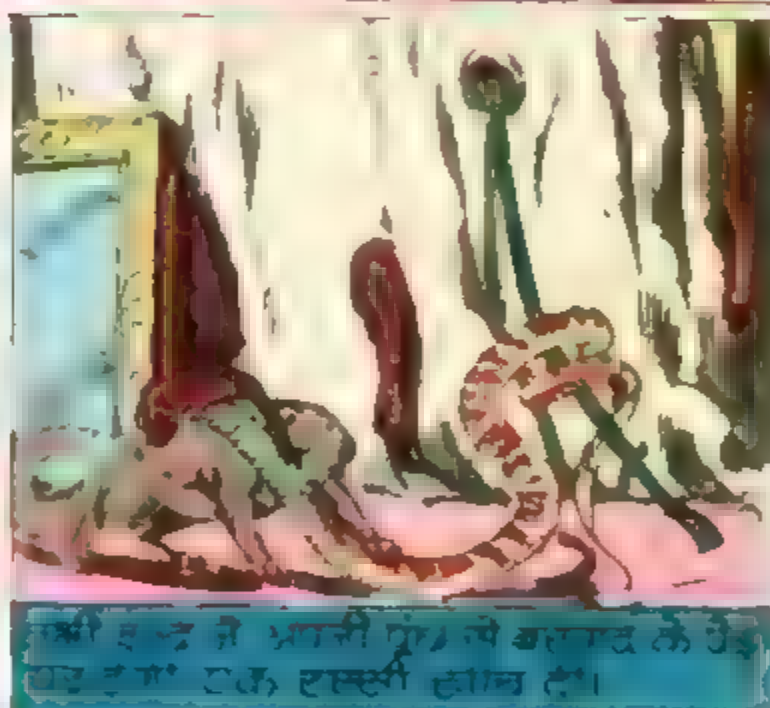
यह छोटा है!

छोछेबाजी के
साथ छोछे से ही काम
लगा पड़ता है।

कह कर लेकले ने इन्द्र के कप को अपने
मुख में दबा लिया। इन्द्र लड़प उठा-

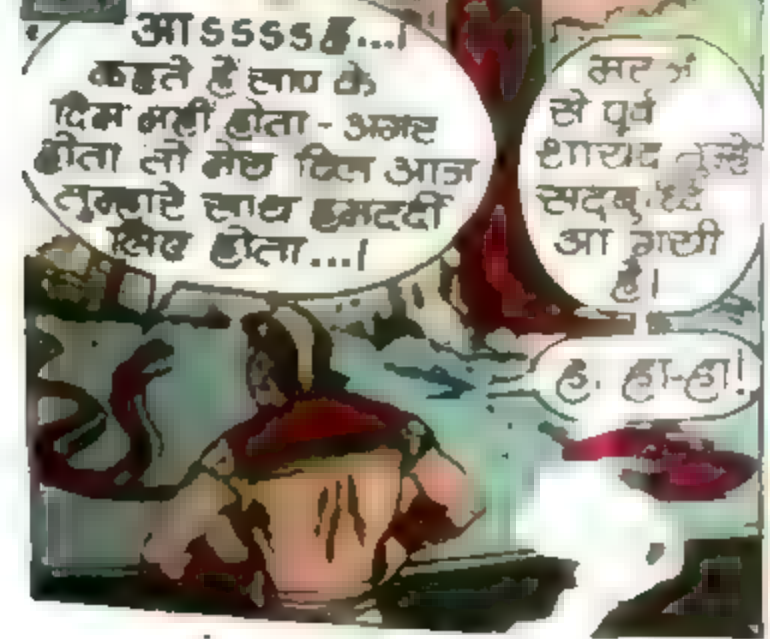


हाय!



कभी इन्द्र ने भगाली पुरुष से बलाघ्न के उद्देश्य
के लिए इन्द्र के हाथों को काट दिया।

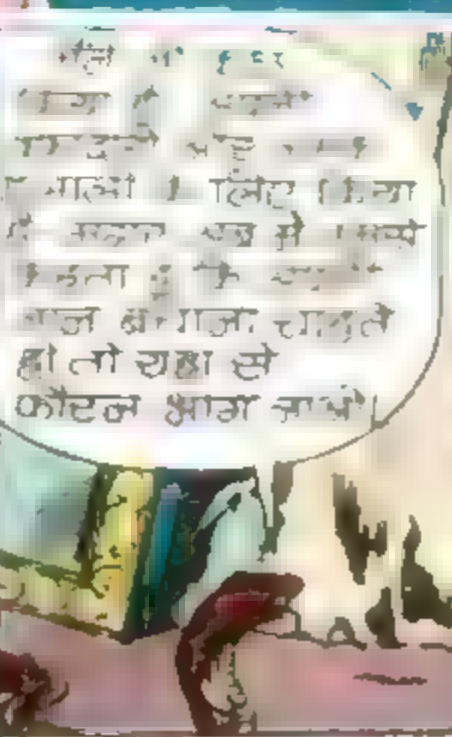
इन्द्र मरणाशय स्थिति में आर्तलाप कर
रहा।



आ sssssह...!
कहते हैं साप के
दिल नहीं होता - अजह
होता तो मेरा दिल आज
तुम्हारे साथ हमदर्दी
लिख होता...!

मरने
से पूर्व
शाश्वत तुम्हें
सदबुद्धि
आ गयी
है।

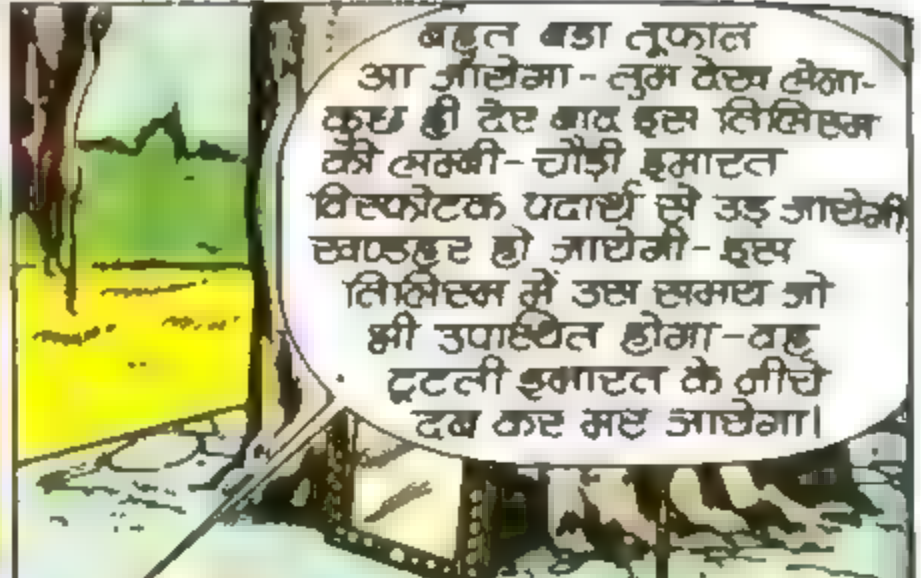
ह. हा-हा!



मैंने जो कुछ
किया है उससे
तुम्हारे अहंकार
गलती हो लिए किन्ना
है मरना सब से बुरा
किसी के अहंकार
गलती हो किन्ना
हो तो राह से
कौटिल भाग जाओ।



मैंने जो कुछ
किया है उससे
तुम्हारे अहंकार
गलती हो लिए किन्ना
है मरना सब से बुरा
किसी के अहंकार
गलती हो किन्ना
हो तो राह से
कौटिल भाग जाओ।



सब कुछ में हाथी बजले लगी।

दलननननननन

ऐसा नहीं हो सकता।

महाराज!
बहुत लो अर्थ हो
जका इस घंटी के बजने
का एक ही अर्थ है-
दुश्मन लिखित को
लौट चुका है और वहां
दाखिल हो चुका है।

चीखता-छिह्लाता जबर कक्ष
ले बाहर की ओर दौड़ा-



लिखित को लिखात्रित कहने वाले
कक्ष में वह दाखिल हुआ।



इस जगह में जो
चीज जबर को हासिल
नहीं हो सकती-वह उसके
दुश्मन को भी हासिल नहीं
होगी।



बहुत आप
कहा कर रहे
हैं महाराज?

अक्सर
अजर मेरी नहीं
बल सकती तब
लौटने की भी
नहीं बनेगी।



जात से
माह डालूंगा
दोनों को...

हा-हा-हा!

अब दोनों में
से कोई जीवित
नहीं रहेगा।



अचानक जोहो की आवाज गूंजने लगी - धड़ाम धड़ाम धड़ाम!

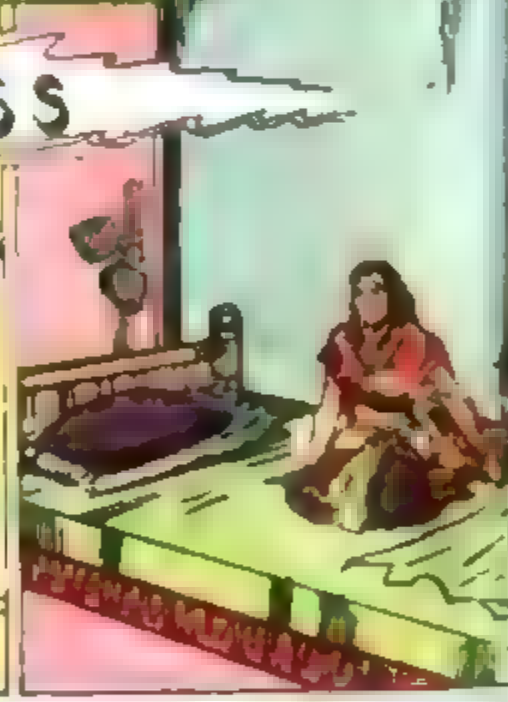
धड़ाम

धड़ाम

धड़ाम



उधर इन्द्र जाल लिफ्ट के काम में खड़ा लौही पुकार रहा था।



प्रत्युत्तर में अप्सरा की आवाज गूंज उठी -

तौसी! मेरे प्यारे तौसी - मैं यहां हूं!



तौसी आवाज की दिशा की ओट दौड़ा।

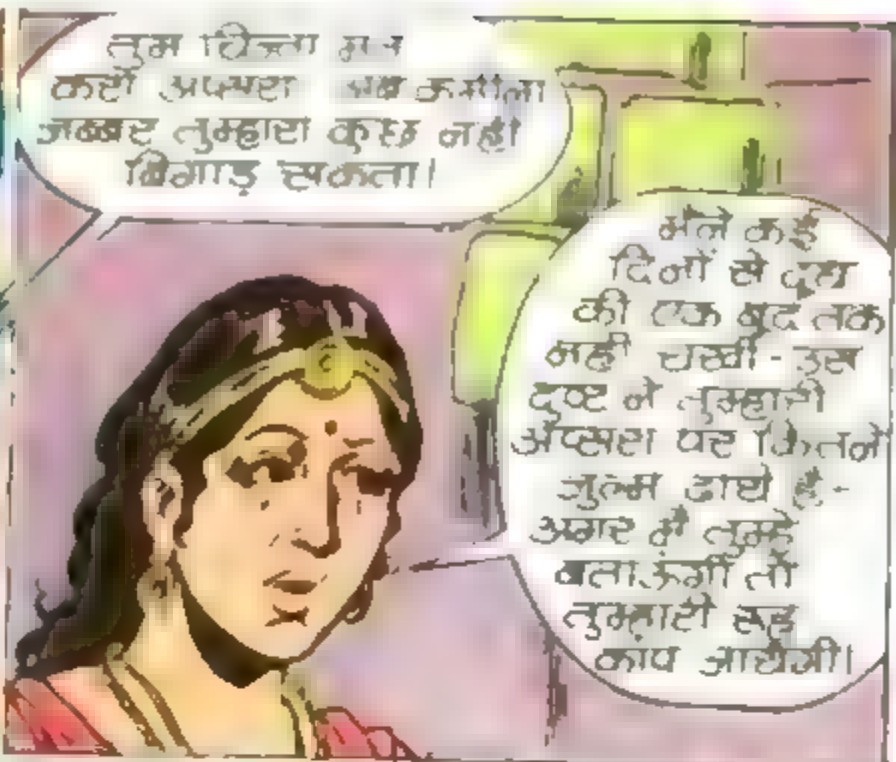
इच्छाधारी सांप



एक कमरे की छिड़की पर उसे अप्सरा की झलक दिखाई दी।

अरे! छिड़की पर तो वह जा रही लगी है।

तुम कैसे हो लौली?



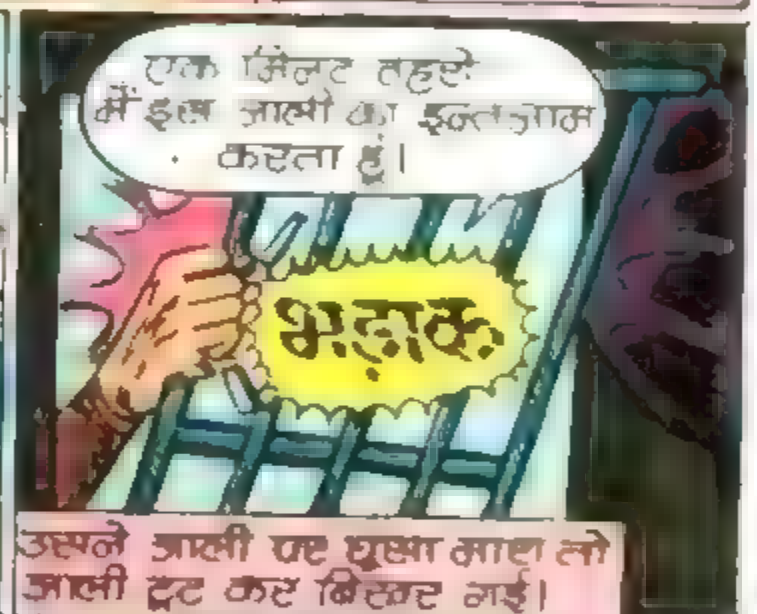
तुम चिन्ता मत करो अप्सरा सब ठीक है जल्द तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

मैंने कई दिनों से दूर की एक बूढ़ी तक नहीं चली - उस दूर ने तुम्हारी अप्सरा पर कितने जुलूम डाले हैं - अगर मैं तुम्हें बताऊंगी तो तुम्हारी सब काब जायेगी।



उस नीच के हाथों के मोंठें दुकड़े-दुकड़े न किसे तो मेरा नाम लौली नहीं...

मेरा दम घुटा आ रहा है - मुझे कैद से बाहर निकालो लौली...



एक झिलट तहलें मैं इस जाली का इस्तफा करता हूँ।

उसने जाली पर घुसा माथा तो जाली टूट कर बिखर गई।



भी-

धड़ाम-धड़ाम-धड़ाम

बचाओ!

जब किन्तु लगी।



लगी कमरे की छत गिर पड़ी और अप्सरा एक पत्थर के नीचे दब गई।



इच्छाधारी सांप

उस राज - दर देहा में छाते तटफ मौत का
मजाल था।



बहती धु-धु कटके जल उठीं।

राजमहल आग की लपटों में-



उस समय तौसी पागलों की हालत में हाथ में
जलती मशाल लेकर एक झोपड़ी में आग लगा
रहा था कि बाबा पहुंच गये-



आग लपटों से घिरे चिल्ला रहे थे।



तुम पागल हो
गये हो तौसी ?

तुमसे दूर हट जाओ बाबा-मैं
पूरी दुनिया में आग लगा
दूंगा।



क्यों लगा दोगे
आग ? पूरी दुनिया
में तुम्हारा क्या
बिगाड़ा है ?



इच्छाधारी सांप



अगर तुम्हें बदले का कहल बरवाना ही है तो तुम्हें अपने बाबा की लाश से गुजरना होगा।

मैंने कहा ना बाबा- मेरे सारे एह चकून सवाए हैं- मैंने अपनी अप्सरा की लाश की सौमल्य खाई है।



और अचानक तौली ने...

हवा में मकखी की ऊंचा उड़ता देख कर बाबा हक्के बक्के रह गये।

९!

fenzz
01.I.C.P.F



ऊक जाओ तौली- प्यार का असर लबाही नहीं है।



तौली नाचब हो गया- लेकिन उसकी आवाज वातावरण में गुंजती रही...

९!

मुझे माफ कहना बाबा- लेकिन अपना प्यार छीलने वाले दुश्मनों को मैं माफ नहीं करूंगा - कभी माफ नहीं करूंगा।

तौली ने जबूर से कैसे बदला लिया ? उसकी अप्सरा मर चुकी थी या वास्तव में जिन्दा थी ? बच्चों यह जानने के लिए तुम्हें अपने प्यारे अंकित टिटुराज का आगामी कॉमिक्स

इच्छाधारी सांप का इंतकाम

पढ़ना होगा। यह ध्यान रहे इच्छाधारी सांप का इंतकाम तुमसी कॉमिक्स और केवल तुमसी कॉमिक्स से ही प्रकाशित होगा।